



राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
रंगमण्डल प्रस्तुति

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

G20
भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार



धर्मवीर भारती कृत

अन्धा युग

निर्देशन **राम गोपाल बजाज**

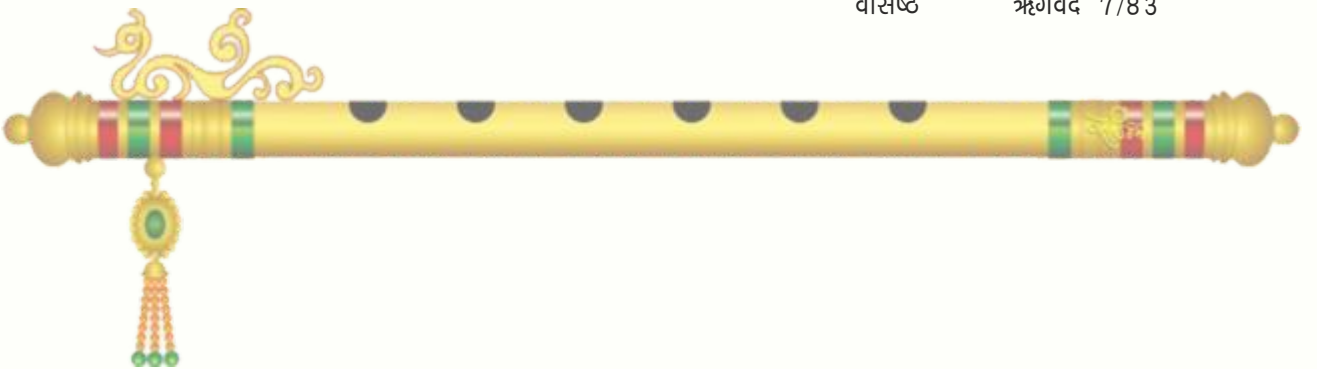


ANDHA YUG

उस दिन जो अन्धा युग अवतरित हुआ जग पर
बीतता नहीं रह-रहकर दोहराता है
हर क्षण होती है प्रभु की मृत्यु
कहीं न कहीं
हर क्षण अंधियारा गहरा होता जाता है।
—अन्धा युग से



यत्रा नरः समयन्ते कृतध्वजो
यस्मिन्नाजा भवति किं चन प्रियम्।
यत्रा भयन्ते भुवना स्वर्दृशस्तत्रा
न इन्द्रावरुणाधि वोचतम् ॥२॥
वसिष्ठ ऋग्वेद ७/८३





राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंगमण्डल

National School of Drama
Repertory Company presents

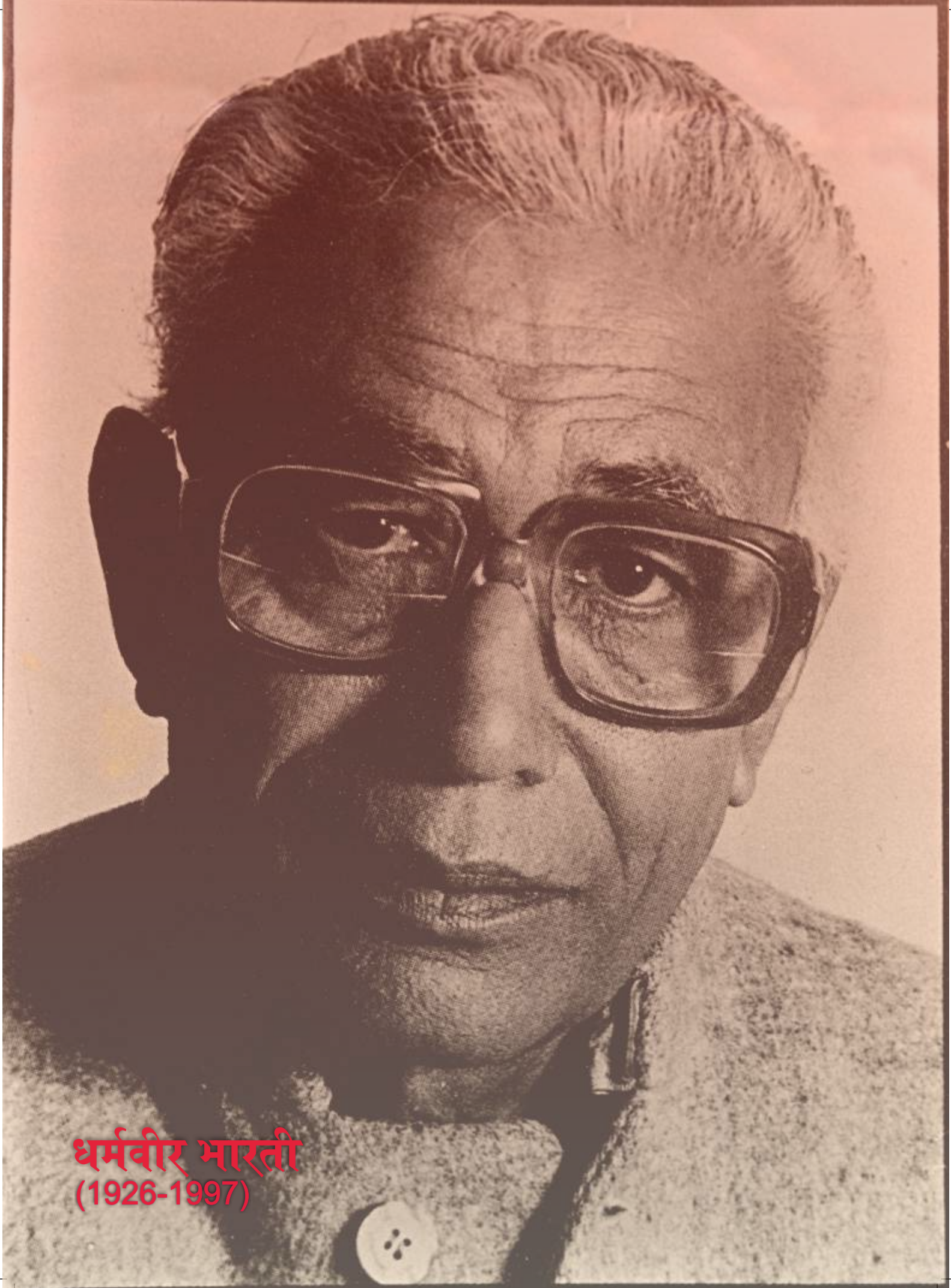
धर्मवीर भारती कृत

अन्ध्या युग

निर्देशन राम गोपाल बजाज

वेशभूषा अम्बा सान्याल
प्रकाश सौति चक्रवर्ती
संगीत व ध्वनि अजय कुमार, संतोष सिंह, राजेश सिंह
मंच सामग्री व मेकअप अरुण कुमार मलिक
नृत्य संयोजन विवेक इम्मानेनी
पोस्टर व ब्रोशर हिमांशु बी जोशी

प्रथम प्रदर्शन
26, 27, 28 मार्च 2023
प्रतिदिन सायं 6:30 बजे
अभिमंच सभागार
बहावलपुर हाउस, भगवानदास रोड
नयी दिल्ली-110001



धर्मवीर भारती
(1926-1997)

धर्मवीर भारती

नाटककार

सन् 1926 में इलाहाबाद में जन्मे धर्मवीर भारती एक प्रसिद्ध कवि, लेखक, नाटककार और प्रतिष्ठित सम्पादक थे। आपने 1946 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. किया और हिन्दी में सर्वोच्च अंक हासिल करने के लिए 'चिन्तामणि घोष पुरस्कार' जीता। इस अवधि के दौरान आप 'अभ्युदय' और 'संगम' पत्रिकाओं के उप-सम्पादक भी बने। बाद में, 1954 में आपने पीएच.डी. पूरी की और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी के व्याख्याता के रूप में नियुक्त हुए।

1950 का दशक भारती के जीवन का सबसे रचनात्मक काल रहा जब आपने कई उपन्यास, नाटक, कविताएँ, निबन्ध और आलोचनात्मक रचनाएँ लिखीं। आपकी उल्लेखनीय उपन्यासों में—'गुनाहों का देवता', 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', 'ग्यारह सपनों का देश' और 'प्रारम्भ से समापन' और कविताओं में—'कनुप्रिया', 'ठण्डा लोहा', 'सात गीत वर्ष', 'सपना अभी भी' और 'टूटा पहिया' शामिल हैं। आपका नाटक—'अन्धा युग' बहुत प्रसिद्ध हुआ जिसे अब तक देश भर में कई बार प्रदर्शित किया गया है। भारती जी 1960 से 1987 तक हिन्दी की प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका 'धर्मयुग' के मुख्य सम्पादक रहे।

धर्मवीर भारती जी को 1972 में साहित्य के लिए पद्मश्री, 1988 में नाटक लेखन के लिए संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार और भारत भारती सम्मान, व्यास सम्मान सहित कई अन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 1997 में भारती जी का निधन हो गया।

Dharamvir Bharati Playwright

Born in 1926 in Allahabad, Dharamvir Bharati was a renowned poet, author, playwright and an Editor of repute. He did his MA in Hindi from Allahabad University in 1946 and won the "Chintamani Ghosh Award" for securing highest marks in Hindi. He became the sub-editor for magazines 'Abhyudaya' and 'Sangam' during this period. Later, he completed his Ph.D. in 1954 and was appointed as a lecturer in Hindi at Allahabad University.

The 1950s decade was the most creative period in Bharati's life when he wrote many novels, dramas, poems, essays, and a number of critical works. His notable works include, novels—'Gunahon ka Devta', 'Suraj Ka Satwan Ghoda', 'Giyara sapno ka desh' and 'Prarambh se Samapan' and poems—'Kanupriya', 'Thanda Loha', 'Saat Geet Varsh', 'Sapana Abhi Bhi' and 'Toota Pahiya' and the most famous drama—'Andha Yug' that has been performed frequently till now. Bharati became the Chief Editor of the famous Hindi literary magazine 'Dharmayug' from 1960 to 1987.

Bharati was awarded the Padmashree for literature in 1972, the Sangeet Natak Akademi Award for Play writing in 1988 and many others including Bharat Bharati Samman, Vyasa Samman etc. He died in 1997.



राम गोपाल बजाज

निर्देशक

भा

रतीय रंगजगत में अपनी पाँच दशक की निरन्तर सक्रियता और उत्कृष्ट प्रतिमानों से महत्वपूर्ण स्थान और आदर प्राप्त करने वाले रंगकर्मी प्रो. राम गोपाल बजाज का जन्म (1940) दरभंगा, बिहार में हुआ था। आपने बिहार विश्वविद्यालय से स्नातक उपाधि और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से 1965 में नाट्यकला में विशेषज्ञता अर्जित की। बाद में आप राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निदेशक (1995–2001) बने।

रंगमंच के प्रति प्रो. बजाज का रुझान छोटी उम्र से ही रहा। बाद में दिल्ली में अपने रंगकर्मी मित्रों स्व. ओम शिवपुरी, स्व. सुधा शिवपुरी, स्व. बी.एम. शाह, स्व. ब.व. कारन्त एवं श्री मोहन महर्षि के साथ मिलकर आपने 'दिशान्तर' नामक नाट्य संस्था की स्थापना की। इस बीच अनेक संस्थानों में नाटक प्रभाग के प्रमुख रहते हुए महती कार्य किया जिनमें मॉडर्न स्कूल, दिल्ली में रंगकला का अध्यापन (1969–73); पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ के भारतीय थिएटर विभाग में रीडर; पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के नाट्य कला विभाग में प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष (1979–80) शामिल हैं। वर्ष 2002 में आप हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय के सरोजनी नायडू स्कूल में डॉ. राधाकृष्णन पीठ के प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष रहे।

एक अभिनेता के रूप में आपके नाटकों 'सुनो जनमेजय', 'हयवदन', 'बेगम का तकिया', 'घासीराम कोतवाल', 'अन्धा युग', 'तुगलक' एवं 'किंग लियर' को बड़ी सराहना मिली। इसी निरन्तरता में आपके द्वारा निर्देशित 'अजातघर', 'आषाढ़ का एक दिन', 'सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक', 'अन्धा युग', 'कैद-ए-हयात', 'स्कन्दगुप्त', 'मुक्तधारा' (पंजाबी भाषा में), 'सीगल', 'भूख आग है', 'तलघर', 'जल डमरू बाजे' और 'कामिया' आदि नाटकों ने आपकी प्रतिष्ठा को और समृद्ध करने का काम किया। वर्ष 2008 में आपने शब्दाकार थिएटर समूह की स्थापना की और 'लैला मजनूँ' नाटक की एक भव्य प्रस्तुति मंचित की।

रानावि निदेशक रहते हुए आपने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के नाट्य समारोह 'भारत रंग महोत्सव', बाल महोत्सवों 'जश्न-ए-बचपन', 'बाल संगम' के आयोजन के अलावा रंग पत्रिका 'रंग प्रसंग' और 'थिएटर इंडिया' का प्रकाशन शुरू किया।

प्रो. बजाज ने वर्ष 1969 से 72 तक जानी मानी पत्रिका 'दिनमान' में नाटकों की समीक्षाएँ और आलोचना भी लिखीं और बादल सरकार, बर्तोल्त ब्रेख्त व गिरीश कर्नाड आदि लेखकों के लगभग पन्द्रह नाटकों के हिन्दी अनुवाद किये। आपने कई जाने माने कवियों की कविताओं का प्रभावी पाठ किया है जो कि वाचिक शब्द की प्रधानता के प्रबल आग्रही होने के चलते काफी चर्चित रहे। आप आकाशवाणी, दूरदर्शन, धारावाहिकों और सिनेमा में भी लगातार सक्रिय रहे, जिनमें 'तमस', 'बसन्ती', 'मैं आजाद हूँ', 'मासूम', 'मिर्च मसाला', 'चाँदनी', 'परजानिया', 'मैंगो ड्रीम्स', 'द मिथ', 'हवेन त्सांग', 'जॉली एल.एल.बी.-टू' आपके महत्वपूर्ण कार्य हैं।

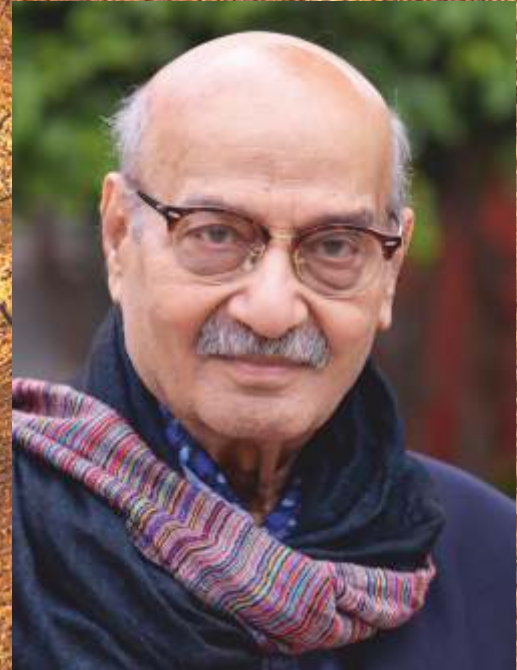
अपनी इस सुदीर्घ एवं निरन्तर सृजन-यात्रा में आपको अब तक अनेक मान-सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें पद्मश्री, संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार, साहित्य कला परिषद का परिषद सम्मान, नान्दीकार सम्मान, राधारमण सम्मान, बिहार कला पुरस्कार (लाइफ़टाइम अचीवमेंट) तथा राष्ट्रीय कालिदास सम्मान शामिल हैं। आपको 2016 में संगीत नाटक अकादेमी की रत्न सदस्यता मिली, वहीं 2018 में यूनेस्को आई.टी.आई. ने विश्व रंगमंच दिवस पर आपको सन्देश प्रसारित करने के लिए आमंत्रित किया।

Ram Gopal Bajaj

Director

A theatre artist who earned an important place and respect in the Indian theatre world with his five-decade-long journey and exemplary work, Prof. Ram Gopal Bajaj was born (in 1940) in Darbhanga, Bihar and completed his graduation from Bihar University. Later, he graduated in dramatic art from the National School of Drama in 1965 and became the Director of the institute between 1995-2001.

Prof. Bajaj was inclined towards theatre at a young age. In Delhi, he with his theatre friends Om Shivpuri, Sudha Shivpuri, BM Shah, B.V. Karanth and Mohan Maharshi established a theatre organization named 'Dishantar'. Meanwhile, he worked as head of the Drama Division in many institutions that include— as a drama teacher at Modern School, Delhi (1969-73), worked as Reader at the Department of Indian Theatre, Panjab University, Chandigarh and as a Professor and Head of the Department of Dramatic Arts, Punjabi University, Patiala (1979-80). In the year 2002, he has also been Professor and Head of Dr. Radhakrishnan Chair at S. N. School of Central University of Hyderabad for a year.



As an actor, he has acted in many well-known plays such as 'Suno Janmejy', 'Hayavadan', 'Begum Ka Takia', 'Ghasiram Kotwal', 'Andha Yug', 'Tughlaq', 'King Lear' and got broad appreciation. In continuance to acting, as a successful and virtuous director, he has directed plays like 'Ajatghar', 'Ashad Ka Ek Din', 'Surya ki Antim Kiran Se Surya ki Pahli Kiran Tak', 'Andha Yug', 'Qaid-e-Hayat', 'Skandagupta', 'Muktdhara' (in the Punjabi language), 'Seagull', 'Bhukh Aag Hai', 'Talghar', 'Jal Damru Baje' and 'Kamiya' etc. to enrich further his reputation. In 2008, he established the Shabdakar Theater Group and staged a grand production of 'Laila Majnu'.

While holding the post of Director at NSD, he conceptualized and established the international level theatre festival 'Bharat Rang Mahotsav' for adults; 'Jashn-e-Bachpan', 'Bal Sangam' for children and initiated the publication of a magazines 'Rang Prasang' and 'Theatre India' on the overall aspects of theatre in the institute.

Prof. Bajaj has written reviews and criticism of plays in the prestigious 'Dinman' magazine between 1969 and 1972 and translated plays of eminent playwrights like Badal Circar, Bertolt Brecht and Girish Karnad etc. into Hindi. He is known for his effective recitation of poems by different poets that have been strongly insistent on the primacy of the word. He has been equally active in All India Radio, Doordarshan, Cinema and theatre. Some of his important telefilms and films include— 'Tamas', 'Basanti', 'Main Azad Hoon', 'Godhuli', 'Masoom', 'Mirch Masala', 'Hip Hip Hurray', 'Chandni', 'Parzania', 'Mango Dreams', 'The Myth', 'Xuan Zang', 'Jolly L.L.B-2'.

In this long and indefatigable journey of excellence and creation, he has received many honours and awards so far, including Padmashree, Sangeet Natak Akademi Award, Parishad Samman of Sahitya Kala Parishad, Nandikar Samman, Radharaman Samman, Bihar State Government's Bihar Art Award (Lifetime Achievement) and the National Kalidas Samman given by the Government of Madhya Pradesh. He received the Ratna Sadasya of Sangeet Natak Akademi in 2016 and UNESCO ITI invited him to broadcast a message on World Theater Day in 2018.

नाटक के बारे में

अन्धा युग धर्मवीर भारती द्वारा लिखित एक काव्य नाटक है और महाभारत युद्ध के अन्तिम दिन की घटनाओं पर आधारित है। युद्ध से प्राचीरें खण्डहर हो चुकी हैं, नगर जल रहा है और कुरुक्षेत्र लाशों और गिद्धों से ढका हुआ है। कौरव सेना के कुछ विचलित योद्धा शोक और क्रोध से भरे हुए हैं। वे प्रतिशोध लेने के लिए कुछ निर्णायक करने के लिए तरस रहे हैं और उस वक्ता अश्वत्थामा की निन्दा करने से इनकार कर देते हैं जब वह ब्रह्मास्त्र छोड़ता है, जो कि सम्पूर्ण पृथ्वी को नष्ट कर सकता है। इसके बजाय, वे युद्ध के लिए कृष्ण को दोष देते हुए उन्हें श्राप तक दे देते हैं। हालाँकि कृष्ण करुणा और सम्वेदना की पुकार हैं और उन्हें दुनिया में जो कुछ भी अच्छा और न्यायपूर्ण है, उसका अवतार माना जाता है। शान्ति सुनिश्चित करने में विफल होने के बावजूद, कृष्ण पूरे नाटक में मौजूद हैं और जो कुछ भी नैतिक और पवित्र है उसकी व्याख्या करते हैं।

देश के विभाजन के तुरन्त बाद लिखा गया यह नाटक आधुनिक भारत के सबसे महत्वपूर्ण नाटकों में से एक माना जाता है, और हिंसा और आक्रामकता की राजनीति पर गहराई से विचार करता है। नाटक अन्ततः उस नैतिक कथन की पुष्टि करता है कि हिंसा का प्रत्येक कार्य अनिवार्य रूप से पूरे समाज को कलंकित करता है।

Andha Yug (The Age of Blindness) is a poetic play written by Dharamvir Bharati and is based on the events of the last day of the Mahabharata. The ramparts are in ruins from the war, the city is burning and Kurukshetra is covered with corpses and vultures. A few disoriented warriors of the Kaurava army are left, raged with grief and anger. They yearn to do something decisive to take revenge and refuse to condemn Aswathama when he releases a Brahmastra, the ultimate weapon that could destroy the world. Instead, they blame Krishna for having cause of the war and curse him. Although Krishna is the voice of compassion and considered as the embodiment of all that is good and just in the world. Krishna, despite failing to ensure peace, is present throughout the play and expounds the moral and the sacred.

Written soon after the partition of the country, the play is one of the most important plays of modern Indian theatre, deeply reflecting on the politics of violence and aggression. The moral of the play is that every act of violence inevitably debases society as a whole.

About the Play



अन्धायुग सम्पूर्ण मानवीय संकट का नाटक है। इसमें सृष्टि के विलय, सृष्टि के संक्रमण और मानव—मात्र की गहन करुणा की अनुभूति है। कृष्ण की मृत्यु का प्रसंग वस्तुतः ईश्वरत्व की अवधारणा की समाप्ति है, जिसके बाद हर एक को अपना-अपना, सब को सबका दायित्व निभाना होगा.... जिसका कोई विकल्प नहीं है। इस प्रसंग में वैष्णव भक्ति का आग्रह दीख सकता है, किन्तु मुझे यहाँ उस प्रभुताई के प्रति सम्मान दिखता है जो मनुष्य की पीड़ा का दायित्व लेने वाली थी।

ईश्वरवाद की आदर्श अवधारणा और व्यवहार में सतत अन्तर्विरोध रहा है। याचक के माध्यम से लेखक ने इस विसंगति का विश्लेषण करने की कोशिश की है। यह याचक बुद्धिजीवी है, मनीषी है, दृष्टा है किन्तु देह यापन के लिए भिक्षाटन करता है। चाटुकारिता में झूठ भी बोलता है किन्तु वही युग के अन्तर्विरोधों को समझता भी है। वही प्रश्न करता है कि क्या घृणा के इस काले नाग का दमन कृष्ण कर पायेंगे? प्रभुता की अवधारणा का रूपान्तरण भी इसी चिन्तक व्याध के द्वारा होता है जो नये दायित्व—बोध का आह्वान करता है।

इस नाटक के कल्पित पात्र एवं कथा गायन के शब्द मुझे उद्देलित करते रहे हैं। प्रतिस्पर्धा नहीं बल्कि सभी पूर्व प्रस्तुतियों के प्रति सम्मान एवं आभार। मेरी कोशिश पात्रों को केन्द्र में लाने की है जिसके पीछे कोई दृश्य—विधान नहीं। श्री कारन्त की नाटकीय संगीत शक्ति, छात्र अभिनेताओं की उद्दाम जिज्ञासा, कवि की व्यंजना और सहृदय समस्तिष्क दर्शकों की सम्वेदना एवं चिन्तन के प्रति आस्था के साथ 'अन्धा युग' की प्रस्तुतियों की दिशा में, यह एक और दिशा संकेत भर है।

उपरोक्त कथन 1992 में रानावि छात्रों के साथ किये 'अन्धा युग' के लिए लिखा निर्देशकीय है। यही कथन अब भी। 1992 के बाद 2002 में तेलुगु, 2006 में सीगल के साथ असमिया में, फिर भारतेन्दु नाट्य अकादेमी के साथ हिन्दी में यह नाटक अलग-अलग ढंग से किया। रानावि रंगमण्डल का आभारी हूँ कि इसे करने के लिए पुनः बुलाया है। यह एक क्लासिक नाटक है लेकिन इसे एक ऐसा नाटक बनाने की कोशिश कर रहा हूँ कि यह प्रोसीनियम व अन्य सभी जगहों पर आसानी से खेला जा सके। मैं इस नाटक की चेतना और सम्वेदना अभी भी प्रासंगिक महसूस कर रहा हूँ। इस प्रस्तुति के संगीत निर्देशकों ने अन्धा युग की पूर्व प्रस्तुतियों के लिए ब. व. कारन्त जी व भास्कर चन्द्रावरकर जी द्वारा परिकल्पित संगीत से भी प्रेरणा ली है।

&jk-xk-c-

Director's Note

The 'Andha Yug' is the drama about human crisis. There is a feeling of merger and transition of the universe and the deep compassion of the mankind. The episode of Krishna's death is virtually the end of the concept of the Godhood, after which everyone have to fulfill his own responsibility. There is no alternative. In this context one can see the insistence of Vaishnava devoutness, but, I see here respect for the sovereignty who was about to take responsibility for the suffering of the people.

There has been a continuous contradiction between the ideal concept and practice of Godhood. The author has tried to analyze this discrepancy through the petitioner. This beggar petitioner is an intellectual, a thinker, a fortune-teller but begs for his livelihood. He also tells lies in sycophancy, but also understands the inner contradictions of the Era. He asks the question whether Krishna will be able to suppress this black snake called hatred? The concept of sovereignty is also transformed by this thinker huntsman, who calls for a new sense of responsibility.

The fictional characters of this play and the words of the lyrical story-telling kept me excited. There is no competition, but respect and gratitude towards all previous productions. My effort is to bring down the characters in the middle, behind which there is no visualization.

This is merely another sign in the direction of Andhayug's productions with the dramatic musical prowess of Sri B.V. Karanth, the exuberant curiosity of the student actors, the euphemism of the poet and the faithfulness to the sensibilities and contemplations of the sympathetic all-embracing audience.

The above statement is the directorial written for 'Andha Yug' prepared with the students of NSD in 1992. Still the same statement. After it, I again did the play in 2002 in Telugu, in 2006 in Assamese with Seagull Repertory, then in Hindi with Bharatendu Natya Akademi. I am grateful to NSD Repertory Company for inviting me again to do it. This is a classic play, but, I am trying to make it such a play that it can be played easily in proscenium and all other places. I still feel the consciousness and sensitivity of this play relevant. The music directors of this production have also taken some inspiration from the music conceived by Karanth ji and Bhaskar Chandravarkar ji for earlier performances of 'Andha Yug'.

— R. G. B.

अम्बा सान्याल

वेशभूषा



अम्बा सान्याल का मंच पर पदार्पण 'हीर रँझा' नाटक से हुआ था। कई वर्षों तक भारतीय कला केन्द्र की रामलीला में कैकई की भूमिका निभाने के अलावा आप रानावि की प्रस्तुति 'जसमा ओड़न' के लिए मास्क और हेड गियर परिकल्पना-निर्माण में शान्ता गाँधी की सहायक रहीं। एक वस्त्र-सज्जा परिकल्पक के रूप में आप रानावि की अनेकानेक प्रस्तुतियों के अलावा फिरोज़शाह कोटला मैदान में प्रदर्शित 'अन्धा युग' और 'तुगलक' की हालिया प्रस्तुतियों का हिस्सा रही हैं। भारत सरकार की एक विशिष्ट परियोजना के तहत आपने परम्परागत साड़ियों और भारत में साड़ी बाँधने की विभिन्न शैलियों का दस्तावेजीकरण किया है, जिसके अब तक तीन खण्ड प्रकाशित हुए हैं। आप संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार विजेता हैं और वस्त्रसज्जा परिकल्पना के लिए चमनलाल ढिंगरा पुरस्कार पा चुकी हैं। आपने कई फिल्मों के लिए भी वेशभूषा परिकल्पना की है और बहुप्रशंसित 'द शिप ऑफ़ थिसियस' व 'कहानी 2' फिल्मों में अभिनय किया है।

Amba Sanyal
Costumes

Amba Sanyal appeared on stage in Heer Ranjha and in the role of Kaikeyi in Ramlila production of Bhartiya Kala Kendra for many years. She assisted Shanta Gandhi in designing the mask and head gear for National School of Drama, Jasma Odan, and has been a part of numerous NSD productions as costume designer as well as the recent productions of Andha Yug and Tughlaq at Feroz Shah Kotla ground. She has also documented the traditional Saris and draping styles of India for a government of India project of which three volumes have been published. She is a Sangeet Natak Awardee and has received Chamanlal Dhingra award for costume designing. She has designed costumes for films and recently acted in the awarded film 'The Ship of Theseus' and 'Kahani 2'.

अम्बा जी का कथन

इस नाटक के लिए हमने सरल-सहज वेशभूषा रखने की कोशिश की है जिससे आलेख से ध्यान न भटके। हमने अलंकरण की तरफ़ न जा कर यह देखा कि वेशभूषा के कलर और टैक्शचर का चरित्र से सम्वाद कैसे हो। कलर और टैक्शचर से ही हम असंगत को उभारने की कोशिश कर रहे हैं।

Amba Sanyal says

We tried to keep costumes simple for this play so that attention doesn't deviate from the text. We did not go for ornamentation, instead we have gone towards colour & texture and its interaction with the character through abstraction.

सौति चक्रवर्ती

प्रकाश

को लकाता में जन्मे सौति चक्रवर्ती ने अपने रंग-जीवन की शुरुआत 1984 में की और लगभग 6 वर्षों तक 'ग्रिप्स' थिएटर से जुड़े रहे। 2001 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से परिकल्पना व निर्देशन में विशेषज्ञता प्राप्त करने के पश्चात आपने सात वर्षों तक रानावि रंगमण्डल में परिकल्पक, निर्देशक और अभिनेता के तौर पर काम किया। आपने देश के लगभग सभी प्रतिष्ठित रंग निर्देशकों के साथ कार्य किया है। रानावि रंगमण्डल के नाटक 'चाणक्य विष्णुगुप्त'; रानावि, सिक्किम के छात्रों के साथ 'उरुभंगम्' के अलावा आपने 'लुक बैक इन एंगर', 'अपरिचित', 'एक्सीडेंटल डैथ ऑफ़ एन अनार्किस्ट', 'अधान्तर' 'अ स्ट्रीटकार नेम्ड डिज़ायर' व 'कन्यादान' आदि नाटकों का निर्देशन किया है। बतौर अभिनेता देश भर में 1000 से ज़्यादा नाटकों में काम किया है और अब तक विभिन्न निर्देशकों के 90 से भी अधिक नाटकों की प्रकाश परिकल्पना कर चुके हैं।



आपने बर्लिन, जर्मनी में आयोजित 'युवा रंगकर्मी कार्यशाला' में भारत का प्रतिनिधित्व किया है और पिछले बारह सालों से विभिन्न रंग गतिविधियों के अलावा रानावि के साथ-साथ अनेक विश्वविद्यालयों व रंग संस्थानों में अध्यापन कर रहे हैं। आप लगभग 10 वर्षों तक भारत रंग महोत्सव के तकनीकी निर्देशक रहे हैं। तकनीकी निर्देशक व प्रकाश परिकल्पक के रूप में आपने जर्मनी, ग्रीस, इटली, रूस, चीन और बांग्लादेश का दौरा किया है। आपने ब्लैक बॉक्स सभागार डिज़ाइन किए हैं और रंग सभागारों और स्पेसों के उन्नयन और विकास के लिए परामर्श भी देते रहे हैं। आपको रंगमंच में प्रकाश परिकल्पना के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 2019 में संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार व 2017 में रानावि के मनोहर सिंह स्मृति पुरस्कार से नवाज़ा गया। इसके अलावा आपको तापस सेन स्मृति पुरस्कार और नटसम्राट पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।

Souti Chakraborty Lights

Born in Kolkata, an alumnus of NSD, Souti Chakraborty started Theatre in 1984 and was associated with the GRIPS theatre for nearly 6 years. Later, he graduated from National School of Drama in the year 2001 with specialisation in Design and Direction and went on to work with its Repertory company for 7 years as a designer, director and actor. Worked with almost all the renowned theatre directors of India, he himself directed 'Chanakya Vishnugupta' for NSD Repertory Company, 'Urubhangam' with NSD, Sikkim students and 'Look Back in Anger', 'Aparichit', 'Accidental Death of an Anarchist', 'Adhantar', 'A Streetcar Named Desire' and 'Kanyadan' for different groups. He has completed almost 1000 performances across India as an actor. A versatile light designer, he designed lights for more than 90 productions of different directors.

He represented India in 'Young Theatre Workers' Workshop' in Berlin, Germany. For the last 12 years, he is teaching in NSD as well as several universities and theatre institutes across the country in addition to other theatre activities. He has been the Technical Director of Bharat Rang Mahotsav for almost 10 years. He has visited Germany, Greece, Italy, Russia, China and Bangladesh as a Technical Director and Lighting Designer. He has designed several Black Box auditoriums and has also been consulting for the upgradation and development of theatre auditoriums and spaces.

For his remarkable contribution in the field of lighting design in theatre, he has been awarded Sangeet Natak Akademi Award for the year 2019 and Manohar Singh Memorial Award by NSD in 2017. He has also been awarded with Tapas Sen Smriti award and Natsamrat award.



अजय कुमार संगीत व ध्वनि



अजय कुमार वर्तमान में रंगमण्डल के कलाकार हैं। आपने अभिनय के साथ-साथ गायन कौशल के लिए भी सम्मान अर्जित किया है। रंगमंच में आपकी दीक्षा 1989 में निर्माण कला मंच, पटना से शुरू हुई थी। बाद में आप रंग विदूषक, भोपाल से भी जुड़े। पटना विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद आप राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली आये और अभिनय में विशेषज्ञता के साथ वर्ष 2000 में स्नातक उपाधि प्राप्त की। आपने ब.व. कारन्त, बंसी कौल, राम गोपाल बजाज, अनुराधा कपूर, रॉबिन दास, त्रिपुरारी शर्मा, नसीरुद्दीन शाह, भास्कर चंदावरकर, संजय उपाध्याय, रॉयस्टेन एबेल, जॉन रसेल ब्राउन और सिसली बेरी के साथ काम किया है। इन प्रतिष्ठित हस्तियों के साथ काम करने के अनुभव ने आपको एक बहुमुखी अभिनेता, निर्देशक, संगीतकार और एक लेखक के रूप में विकसित होने में मदद की।

अजय कुमार ने 50 से अधिक नाटकों, कविताओं, कहानियों और जीवनियों का मंचन किया है। आपके महत्वपूर्ण कार्यों में टिम सपल निर्देशित शेक्सपियर का नाटक 'अ मिडसमर नाइट्स ड्रीम' भी शामिल है जो कि ब्रिटिश काउंसिल और रॉयल शेक्सपियर कम्पनी, स्ट्रैटफोर्ड-ऑन-एवन, इंग्लैंड के साथ एक सहयोगात्मक कार्य था। इसके अलावा आपने डैश आर्ट ग्रुप, यूके; एक्ट प्रोडक्शन, यूके; सीएपीए, यूएसए के साथ भी काम किया है और अपनी प्रस्तुतियों के साथ दुनिया भर की यात्रा की है। रानावि में रंग संगीत के अतिथि संकाय रहे अजय बतौर संगीत निर्देशक 50 से अधिक नाटकों से जुड़े रहे हैं। आपने कथा-गायन-वाचन के आख्यानान्तात्मक कला रूप पर काम करते हुए कुशलता से अपने लिए एक जगह बनायी है, जहाँ एक गायक-अभिनेता कई पात्रों का अभिनय करता है। इस रूप में, आपने दो प्रमुख नाट्य प्रस्तुतियाँ तैयार की हैं – 'बड़ा भाँड तो बड़ा भाँड', और 'माई री में का से कहूँ'।

रंगमंच में आपके योगदान के लिए जहाँ कई संस्थाओं ने आपको सम्मानित किया है, वहीं रंगमंच संगीत के क्षेत्र में आपकी उल्लेखनीय प्रतिभा के लिए वर्ष 2008 में संगीत नाटक अकादेमी के उस्ताद बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

Ajay Kumar Music & Sound

Ajay Kumar is presently a performer in Repertory Company. He has earned respect for his acting as well as singing skills. His initiation in theatre began with Nirman Kala Manch, Patna in 1989. Later, he also joined Rang Vidushak, Bhopal. After obtaining his graduation from Patna University, Ajay Kumar went on to attend National School of Drama, New Delhi where he completed his course in the year 2000 with specialization in acting. Ajay Kumar has worked with B.V. Karanth, Banshi Kaul, Ram Gopal Bajaj, Anuradha Kapur, Robin Das, Tripurari Sharma, Naseerudin Shah, Bhaskar Chandavarkar, Sanjay Upadhyay, Roysten Abel, John Russel Brown, and Cicely Berry among others. His experience of working with these eminent personalities helped him grow as a versatile actor, director, music composer and a writer.

Ajay Kumar has acted in more than 50 plays, dramatic representation of poetries, stories and biographies. Some of his most significant works include Shakespeare's 'A Midsummer Night's Dream', directed by Tim Supple. It was a collaborative work with the British Council and the Royal Shakespeare Company, Stratford-upon-Avon, England. He has also worked with Dash Art Group, UK, Act Production, UK, CAPA, USA and has traveled all over the world for his performances. He has been a visiting faculty for theatre music at NSD and associated with more than 50 plays as a music director. Ajay Kumar has skillfully worked to create a niche for himself while working on narrative art form of Katha-Gaayan-Vachan where a singer-actor performs many characters. In this form, he has created two prominent works – 'Bada Bhand to Bada Bhand', and 'Mai Ree Main Ka Se Kahoon'.

Many institutions have felicitated him for his contribution in the field, the Sangeet Natak Akademi awarded him with Ustad Bismillah Khan Yuva Puraskar for the year 2008 for his notable talent in the field of theatre music.

संतोष कुमार सिंह (सैंडी)

संगीत व ध्वनि

समकालीन भारतीय संगीत, प्रदर्शन कला और नवीन मीडिया के क्षेत्र में संतोष कुमार सिंह (सैंडी) एक जाने-माने संगीतकार और ध्वनि परिकल्पक हैं। आपके नाम पर 450 से अधिक मंच प्रस्तुतियाँ, 80 टेलीविजन धारावाहिक, 60 वृत्तचित्र, 120 एलबम, 38 प्रमुख फ़िल्में हैं। आप भारत भर और विदेशों में 40 से अधिक बैंड व कॉयर का हिस्सा रहे हैं और विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों के साथ जुड़कर विशेष रूप से दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के निराश्रित बच्चों के साथ सक्रिय रूप से काम करते रहे हैं। वर्तमान में आप अपनी साउण्ड डिज़ाइन कम्पनी 'साउण्डप्रो-1' के साथ कार्यरत हैं।



Santosh Kumar Singh (Sandy)

Music & Sound

A well-known name in the field of contemporary Indian music, performing arts and new media, Santosh Kumar Singh (Sandy) is a music composer and sound designer. More than 450 stage productions, 80 television serials, 60 documentaries, 120 albums, 38 major film productions are in his name. He has also been part of more than 40 band start-ups and choir throughout India and abroad. Working with various NGO's, he has been actively involved in working with street children of the National Capital Region of Delhi. As for now, he is busy with assignments for his sound design company 'SOUNDPRO1'.



राजेश सिंह संगीत व ध्वनि



बिहार विश्वविद्यालय से स्नातक, राजेश सिंह ने रंगकर्म में शुरुआती प्रशिक्षण श्रीराम सेन्टर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स, नयी दिल्ली से प्राप्त किया। बाद में, आपने साहित्य कला परिषद रंगमण्डल व श्रीराम सेन्टर रंगमण्डल में एक कलाकार के रूप में काम किया। तत्पश्चात आपने 2006 में रंग तकनीक व परिकल्पना में विशेषज्ञता के साथ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से स्नातक उपाधि प्राप्त की और गंधर्व महाविद्यालय से आपने संगीत में प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन्लैक्स छात्रवृत्ति के तहत आपने 2008-09 में लन्दन एकेडमी ऑफ म्यूजिक एण्ड ड्रामेटिक आर्ट्स, यूनाइटेड किंगडम से रंग परिकल्पना, निर्देशन व मंच प्रबन्धन का अध्ययन किया।

ब.व. कारन्त, के.एन. पणिकर, राम गोपाल बजाज, देवेन्द्रराज अंकुर, मोहन महर्षि व अन्य प्रख्यात रंग हस्तियों के साथ काम करते हुए आपने परिकल्पना व निर्देशन की अपनी विशेष शैली विकसित की। आपके प्रशंसित निर्देशकीय कार्यों में 'रास', 'मेटामोर्फोसिस', 'रामलीला', 'जाँच पड़ताल', 'राग दरबारी', 'अपना अपना सवाल', 'पोस्टर', 'एक जोरदार लड़की की कहानी', 'एक कलम सड़क किनारे', 'ब्लैकबोर्ड लैण्ड', 'हाउ टू डिसेपियर कम्पलीटली एण्ड नेवर बी फाउण्ड', 'आदमी और तंत्र', 'कबाब', 'बाबूजी', 'व्यक्तिगत' आदि शामिल हैं।

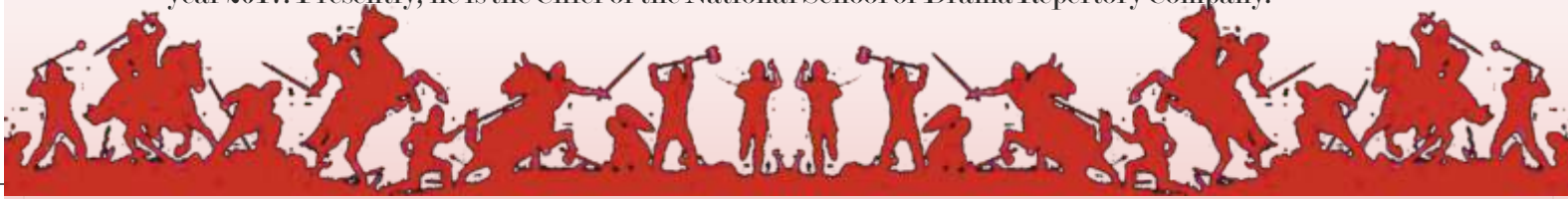
साहित्य कला परिषद, दिल्ली सरकार ने आपके दो नाटकों को सर्वश्रेष्ठ नाटक के तौर पर चुना और आपको सर्वश्रेष्ठ निर्देशक के पुरस्कार से सम्मानित किया है। 2009 में राम गोपाल बजाज द्वारा निर्देशित नाटक 'लैला मजनूँ' की ध्वनि परिकल्पना के लिए आपको महिन्द्रा पुरस्कार दिया गया। राजेश को वर्ष 2017 में दृश्य परिकल्पना के लिए केन्द्रीय संगीत नाटक अकादेमी के बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्तमान में आप राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंगमण्डल के प्रमुख हैं।

Rajesh Singh Music & Sound

A graduate of Bihar University, Rajesh Singh initially received training in Theatre at Shriram Centre for Performing Arts, New Delhi. Later, he worked as an artist at Sahitya Kala Parishad Repertory Company and Shriram Centre Repertory Company. Then, he graduated from the National School of Drama with specialization in Theatre Techniques and Design in 2006. He also got training in Music from Gandharva Mahavidhyalaya. With the INLAKS Scholarship, he studied Advance Theatre Design, Direction and Stage Management at London Academy of Music and Dramatic Arts, United Kingdom in 2008-2009.

He developed his own style in Design and Direction while working with eminent theatre personalities such as B.V. Karanth, K. N. Panikkar, Ram Gopal Bajaj, D. R. Ankur, Mohan Maharishi and others. His acclaimed directorial ventures are 'Raas', Kafka's 'Metamorphosis', 'Ramleela', 'Jaanch Padtaal', 'Raag Darbari', 'Apna Apna Sawaal', 'Poster', 'Ek Zordaar Ladki ki Kahani', 'Ek Kalam Sadak Kinare', 'Blackboard Land', 'How to Disappear Completely and Never be Found', 'Aadami aur Tantra', 'Kabab', 'Babuji', 'Vyaktigat' etc.

His plays were selected under Best Play category twice and he got Best Director Award from Sahitya Kala Parishad, Govt. of Delhi. He received Mahindra award for Excellence in Theatre Arts for Sound Design of the play 'Laila Majnu' directed by Ram Gopal Bajaj in 2009. Rajesh was also awarded with Central Sangeet Natak Akademi's Bismillah Khan Yuva Puraskar in the field of Scenic Design in the year 2017. Presently, he is the Chief of the National School of Drama Repertory Company.



अरुण कुमार मलिक

मंच सामग्री व मेकअप

उड़िसा में जन्मे व पले-बढ़े अरुण कुमार मलिक उत्कल विश्वविद्यालय से ललित कला (शिल्पकला) में बी.एफ.ए. और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से अभिनय में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (2007) प्राप्त हैं। तब से आप एक अभिनेता, निर्देशक, मंच व मंच-सामग्री अभिकल्पक के रूप में कार्य कर रहे हैं। आपने 250 से भी अधिक नाटकों में अभिकल्पक एवं कलाकार के रूप में कार्य किया है। आपने कुछ फिल्मों और टीवी धारावाहिकों में भी कार्य किया है। आपको यू.के. में कृत्रिम रूप-सज्जा (प्रोस्थेटिक मेकअप) का अध्ययन करने के लिए चार्ल्स वॉलेस इंडिया ट्रस्ट फ़ैलोशिप से नवाज़ा गया। आपने देश के विभिन्न भागों में कई रंगमंच कार्यशालाओं का संचालन किया है। आपको वर्ष 2014-15 में केन्द्रीय संगीत नाटक अकादेमी द्वारा बिस्मिल्लाह ख़ान युवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आप मई 2017 से रानावि में सहायक प्रोफ़ेसर के पद पर कार्य कर रहे हैं।



Aruna Kumar Malik Props & Makeup

Born and brought up in Orissa, Aruna Kumar Malik completed his B.F.A. in Fine Arts (Sculpture) from Utkal University and Graduate Diploma in Acting from National School of Drama in 2007. Since then, he has been working as an actor, director, set & props designer. He has worked in more than 250 plays as designer & actor. He has acted in few films and TV serials also. He has been awarded Charles Wallace India Trust Fellowship to study advance prosthetic make up in UK. He has conducted several theatre workshops in different parts of the country. He has been awarded with Bismillah Khan Youth Award by Sangeet Natak Akademi in 2014-15. He has joined NSD as Assistant Professor in May 2017.



विवेक इम्मानेनी

नृत्य संयोजन



राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के पूर्व छात्र विवेक इम्मानेनी ने बचपन से ही अपने पिता के रंग समूह कलारंजनी से रंगमंचीय यात्रा शुरू कर दी थी और 'बुराकथा', 'पल्ले सुधुलु' जैसे एकांकी और कई नुक्कड़ नाटकों में अभिनय किया। आपने कुचिपुड़ी सीखी और टीवी रियलिटी डान्स शो में प्रदर्शन किया। कार्बनिक रसायन विज्ञान व संचार और पत्रकारिता जैसे विषयों में स्नात्कोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद आपने टीएफआई में बतौर सहयोगी निर्देशक व लेखक काम किया। तत्पश्चात आपने तेलुगु विश्वविद्यालय, तेलंगाना से प्रदर्शन कला में स्नात्कोत्तर किया और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में चयनित हुए। इसके बाद एक पेशेवर कलाकार के रूप में आप राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंगमण्डल में शामिल हो गए और 'एक्सप्लोरिंग स्टिलनेस' विषय पर रिसर्च फेलोशिप पूरी की। इस अवधि के दौरान आपने रॉयल एकेडमी ऑफ ड्रामेटिक आर्ट (राडा), लंदन और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नयी दिल्ली के बीच छात्र विनिमय कार्यक्रम के तहत लंदन का दौरा भी किया। फिर आपने दो साल तक रामानायडू फिल्म स्कूल, हैदराबाद में सहायक प्रोफेसर (अभिनय) के रूप में काम किया।

प्रो. विदुषी रीता गांगुली के साथ आपने एक अभिनेता व सहयोगी निर्देशक के रूप में काम किया है और यूनेस्को चेयर के तहत सेंट्रल एकेडमी ऑफ ड्रामा, चीन में शिक्षा में रंगमंच पर हुई एशियाई पारम्परिक रंग कार्यशाला में भाग लिया। आपने एन.एस. एस. के साथ 2006 में राजपथ व राष्ट्रपति भवन में आयोजित गणतंत्र दिवस परेड में भी भाग लिया है। विभिन्न शैलियों की लगभग 50 रंग प्रस्तुतियों में प्रमुख किरदार निभाते हुए 250 से अधिक शो कर चुके विवेक को वाइकि की इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल (यूएसए) और पलोरिडा बीच इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में अपनी पहली तेलुगु फिल्म 'स्क्रीनप्ले' के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार मिला है। आप 2022 से रानावि में सहायक प्राध्यापक हैं।

Vivek Emmaneni Choreography

An alumnus of National School of Drama, Vivek Emmaneni has started his theatre journey in early childhood with his father's group Kalaaranjani and performed in one act plays like 'Burrakatha', 'Palle Suddhulu' and many street plays. He learnt Kuchipudi and performed in T.V. reality dance shows. After completion of two master degrees – one in Organic Chemistry and another in communication & journalism, he worked in T.F.I. as an Associate Director and Script Writer. Later, he studied Master of Performing Arts from Telugu University, Telangana and got selected in National School of Drama. Later, he joined National School of Drama Repertory Company as a professional artist and completed research fellowship on the topic 'Exploring Stillness'. During the period, he also visited London under the Student Exchange programme between the Royal Academy of Dramatic Art (RADA), London and the National School of Drama, New Delhi. He has worked as an Assistant Professor (Acting) at Ramanaidu Film School, Hyderabad for two years.

Worked with Prof. Vidushi Rita Ganguly as an Actor and Associate Director, he has participated in the 'Asian Traditional Theatre Workshop' at Central Academy of Drama, China under UNESCO Chair on Theatre in Education. He has also participated in the Republic Day Parade held at Rajpath and Rashtrapati Bhawan held in 2006 with N.S.S. Played major characters in Nearly 50 theatre productions in different forms and performed more than 250 shows, Vivek received Best Actor award in Waikiki International film festival (U.S.A.) and Florida Beach International film festival for his Telugu debut film titled 'Screenplay'. Presently, he is the Assistant Professor at NSD.

हिमांशु बी जोशी

पोस्टर-ब्रोशर

लेखक, परिकल्पक व निर्देशक हिमांशु बी जोशी का राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से एक लम्बा जुड़ाव रहा है। आपने जहाँ रानावि व इसके विभिन्न केन्द्रों के पोस्टर-ब्रोशर तथा प्रोस्पैक्टस परिकल्पित किये हैं वहीं एक महत्वपूर्ण प्रकाश परिकल्पक के तौर पर आपने कीर्ति जैन, अनुराधा कपूर, एमके रैना, बिपिन कुमार, भारती शर्मा, अभिलाष पिल्लई, दीपन शिवरामन, सावि सावरकर आदि कई प्रसिद्ध निर्देशकों व कलाकारों के नाटकों/प्रदर्शनियों के लिए प्रकाश परिकल्पना की है। आप भारत रंग महोत्सव, भारत में जर्मन महोत्सव, पूर्वा (महिला रंग निर्देशकों का महोत्सव), डेज़ ऑफ़ रशियन कल्चर और जापान फ़ाउण्डेशन, टोक्यो द्वारा निर्मित 'मैमोरीज़ ऑफ़ अ लीजेंड' के तकनीकी समन्वयक रहे हैं। आप लीला (दक्षिण एशियाई महिला रंगकर्मी महोत्सव) के मुख्य तकनीकी समन्वयक व केरल के अन्तरराष्ट्रीय रंग महोत्सव (इटफ़ोक) के महोत्सव संयोजक भी रहे हैं। हिमांशु ने कई नाटक लिखे, अनुवादित व रूपान्तरित किये हैं। इसके अलावा आपने 'खोज', 'छतरियाँ', 'हानूश', 'बंबई के फ़ुटपाथ पर एक हज़ार रातें', 'अ-राम की शक्ति पूजा', तथा 'शो मस्ट गो ऑन' के साथ-साथ बच्चों के कई नाटक निर्देशित किये हैं।

रंगमंच में भारत सरकार की कनिष्ठ व वरिष्ठ शोधवृत्ति प्राप्त हिमांशु देश भर में सभागारों के निर्माण परामर्शदाता के रूप में कार्य करने के साथ-साथ प्रकाश व्यवस्था, नाट्य लेखन व मंच परिकल्पना में प्रशिक्षण भी देते रहे हैं। प्रकाश परिकल्पना में योगदान के लिए आपको नटसम्राट सम्मान से नवाज़ा गया है। वर्तमान में आप हिन्दी की जानी मानी रंग पत्रिका नटरंग के अतिथि सम्पादक हैं।



Himanshu B Joshi

Poster Brochure

A writer, designer & director, Himanshu B Joshi has a long association with National School of Drama. He has designed poster-brochures of many productions and prospectus for NSD, Delhi and its centers (Sikkim & Tripura). As a prominent lighting designer, he designed lights for the plays by many eminent directors & artists including Kirti Jain, Anuradha Kapur, MK Raina, Bipin Kumar, Bharti Sharma, Abhilash Pillai, Deepan Shivaraman, Savi Savarkar and others. He has been technical coordinator for Bharat Rang Mahotsava, German Festival in India, Poorva (Women Directors' Theatre Festival), Days of Russian Culture in India and India shows of 'Memories of Legend' produced by Japan Foundation, Tokyo. He was the Chief Technical Coordinator for Leela (South Asian Women's Theatre Festival) and Festival Coordinator for International Theatre Festival of Kerala (ITFoK). Himanshu has written, translated and adapted a number of plays. He has also directed plays like 'Khoj', 'Chhatariyan', 'Hanush', 'Bambai ke Foothpath par Ek Hazar Ratein', 'A-Ram ki Shakti Puja', 'Show Must Go on' and many children's plays.

A recipient of Junior and senior research fellowships on theatre from Govt. of India, Himanshu has been teaching lighting, play writing, and space designing as well as providing consultancy services for constructing theatre halls across the country. He was bestowed with Natsamrat award for his contribution in lighting design. Presently, he is the Guest Editor to the Natarang, a prestigious theatre journal in Hindi.

मंच पर

xkUèkkjh	पोतशंगबम रीता देवी / शिल्पा भारती
èk' r jk"Y	अश्विन वर्मा
fonj	अजय कुमार / अंकुर सिंह / सुशील कान्त मिश्रा
—roek	नवीन सिंह ठाकुर
—ikpk;l	सुमन कुमार
lit ;	धीरज कुमार
;l;Rl	अनन्त शर्मा
v'ORFkke	बिक्रम लेप्चा
xixk l fud	सौरभ गुरुदास मेश्राम
çgjh&1	अंकुर सिंह / सत्येन्द्र मलिक / अजय कुमार
çgjh&2	बिपीन घोबाले / हीरा लाल रॉय
çgjh&3	हीरा लाल रॉय
çgjh&4	सत्येन्द्र मलिक

o) ;kpd	विकाश गुप्ता / मज़िबुर रहमान
;fèkf" Bj	मज़िबुर रहमान / विकाश गुप्ता
f'ko	पूजा गुप्ता / सुगन्ध पाण्डे
myd	सुगन्ध पाण्डे / माधवी शर्मा
dkvk	माधवी शर्मा / सुगन्ध पाण्डे
dkj l	माधवी शर्मा, अदिति आर्या, सुगन्ध पाण्डे / पूजा गुप्ता, मधुरिमा तरफदार, शिल्पा भारती / पोतशंगबम रीता देवी, शिवानी भारतीय, भावान्जली सक्सेना, सुशील कान्त मिश्रा, मज़िबुर रहमान, सत्येन्द्र मलिक, हीरा लाल रॉय व अन्य कलाकार
ik'o' Loj	वीणा धर, ओम शिवपुरी राम गोपाल बजाज

On Stage

Gandhari	Potshangbam Rita Devi / Shilpa Bharti	Yudhishtir	Mazibur Rehman / Vikash Gupta
Dhritarashtra	Ashwin Verma	Shiva	Pooja Gupta / Sugandha Pandey
Vidur	Ajay Kumar / Ankur Singh / Susheel Kant Mishra	Owl	Sugandha Pandey / Madhavi Sharma
Kritvarma	Naveen Singh Thakur	Crow	Madhavi Sharma / Sugandha Pandey
Kripacharya	Suman Kumar	Chorus	Madhavi Sharma, Aditi Arya, Sugandha Pandey / Pooja Gupta, Madhurima Tarafder, Shilpa Bharti / Potshangbam Rita Devi, Shivani Bhartiya, Bhavanjali Saxena, Susheel Kant Mishra, Mazibur Rehman, Satyender Malik, Hira Lal Roy & other Artists
Sanjay	Dheeraj Kumar	Recorded Voice	Veena Dhar, Om Shivpuri Ram Gopal Bajaj
Yuyutsu	Anant Sharma		
Ashwatthama	Bikram Lepcha		
Dumb Soldier	Saurabh Gurudas Meshram		
Guard-1	Ankur Singh / Satyender Malik / Ajay Kumar		
Guard-2	Bipin Ghobale / Hira Lal Roy		
Guard-3	Hira Lal Roy		
Guard-4	Satyender Malik		
Old Petitioner	Vikash Gupta / Mazibur Rehman		

मंच परे

ep

सहायक

मंच निष्पादन

o'khk'kk

सहायक

वेशभूषा प्रभारी

वेशभूषा निष्पादन

i:dk'k

सहायक

प्रकाश निष्पादन

l:ixhr o èofu

संगीतकार

ध्वनि अंकन

ध्वनि संचालन

ध्वनि निष्पादन

राम गोपाल बजाज

राजेश सिंह, अरुण मलिक

बिक्रम कुमार, तक्रमीर

अम्बा सान्याल

दुर्गा शर्मा

पार्वती बिष्ट

ईश्वर सिंह, अभिमन्यु कुमार

सौति चक्रवर्ती

सुशील कान्त मिश्रा

मो. सुलेमान, सुनील कुमार,

प्रदीप अग्रवाल

अजय कुमार, संतोष कुमार

सिंह, राजेश सिंह

राजेश पाठक, संतोष कुमार,

शैलेन्द्र चौहान, मुस्तफा हुसैन

के. सतीश

मुकेश कुमार

मुकेश कुमार, सुनील सिंह

ep l kexh o

ed&vi

मंच सामग्री प्रभारी

uR; l;ktu

ikLVj&ck'kj

मंच-पार्श्व सहायक

फोटोग्राफी

प्रचार

प्रदर्शनी

रंगमण्डल प्रशासन

निर्देशक के निजी

व प्रस्तुति सहायक

सहायक निर्देशक

सहयोगी निर्देशक

ukVd dkj

funi'ku

अरुण कुमार मलिक

मोतीलाल खरे

विवेक इम्मानेनी

हिमांशु बी जोशी

सभी रंगमण्डल कलाकार

दीपक कुमार,

पियूष श्रीवास्तव,

सचिन कुमार

ई. गजलक्ष्मी, प्रकाश झा

राजबल, पवन कुमार

जुबेर बेदी, आदित्य वर्मा

पवन कुमार, धनराज

रवीन्द्र राजेश्वर सिंह

पूजा गुप्ता

राजेश सिंह

èkeohj Hkkjrh

jke xkiky ctk

Off Stage

Sets

Assistant

Set Execution

Costumes

Assistant

Costume In-charge

Costumes Execution

Lighting

Assistant

Lights Execution

Music & Sound

Musicians

Sound Recording

Sound Operation

Sound Execution

Ram Gopal Bajaj

Rajesh Singh,

Aruna Kumar Malik

Bikram Kumar, Taqmeer

Amba Sanyal

Durga Sharma

Parvati Bisht

Ishwar Singh,

Abhimanyu Kumar

Souti Chakraborty

Susheel Kant Mishra

Md. Suleman, Sunil

Singh, Pradeep Aggarwal

Ajay Kumar,

Santosh Kumar Singh,

Rajesh Singh

Rajesh Pathak, Santosh

Kumar, Shailendra

Chauhan, Mustafa

Hussain

K. Satish

Mukesh Kumar

Mukesh Kumar,

Sunil Singh

Props & Make-up

Properties In-charge

Choreography

Poster-Brochure

Back Stage Assist.

Photography

Publicity

Exhibition

Repertory Admin.

Director's Personal

& Prod. Assistant

Assistant Director

Associate Director

Playwright

Direction

Aruna Kumar Malik

Motilal Khare

Vivek Emmaneni

Himanshu B Joshi

All Repertory Artists

Deepak Kumar,

Piyush Shrivastava,

Sachin Kumar

E. Gajalakshmi,

Prakash Jha

Rajbal, Pawan Kumar

Zubair Bedi, Aditya

Verma, Pawan Kumar,

Dhanraj

Ravindra Rajeshwar

Singh

Pooja Gupta

Rajesh Singh

Dharamvir Bharati

Ram Gopal Bajaj





NSD REPERTORY COMPANY ARTISTS 2023-24



Ajay Kumar



Pooja Gupta



Anamika Sagar



Potshangbam Rita Devi



Susheel Kant Mishra



Mazibur Rehman



Bipin Ghobale



Bikram Lepcha



Aditi Arya



Shilpa Bharti



Sugandha Pandey



Vikash Gupta



Ashwin Verma



Madhurima Tarafder



Shivani Bhartiya



Anant Sharma



Hira Lal Roy



Ankur Singh



Ashutosh Banerjee



Saurabh Meshram



Satyender Malik



Suman Kumar



Dheeraj Kumar



Bhavanjali Saxena



Madhavi Sharma

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंगमण्डल

इब्राहिम अल्काजी ने एक प्रयोग के मद्देनज़र वर्ष 1964-65 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के रंगमण्डल की स्थापना की। शुरू में इसमें सिर्फ़ चार अभिनेता थे। बाद में ऐसे अनेक अभिनेताओं, संगीतकारों और तकनीशियनों को लेकर इस रंगमण्डल का विस्तार हुआ, जो मुख्यतः राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के स्नातक थे। वर्ष 1964 में स्व. ओम शिवपुरी और बाद में 1977 में स्व. मनोहर सिंह प्रथम नियमित रंगमण्डल प्रमुख बने। वर्ष 1985 में मनोहर सिंह के जाने के बाद उत्तरा बावकर और सुरेखा सीकरी ने रंगमण्डल का कार्यभार सम्भाला।

कालान्तर में स्व. जे. एन. कौशल रंगमण्डल के प्रमुख के रूप में पदासीन हुए। 1988 से 1994 तक प्रो. राम गोपाल बजाज रंगमण्डल के प्रमुख रहे। उनके बाद स्व. जे.एन. कौशल ने 1994 से 1997 तक पुनः रंगमण्डल प्रमुख का कार्यभार सम्भाला। वर्ष 1999 से 2021 तक श्री सुरेश शर्मा रंगमण्डल प्रमुख के पद पर रहे। वर्तमान में श्री राजेश सिंह रंगमण्डल प्रमुख हैं।

रंगमण्डल वर्षों से विविध प्रकार की नाट्य प्रस्तुतियों का मंचन करता रहा है, जिनमें शैलीबद्ध संगीतधर्मी नाटकों के साथ-साथ यथार्थवादी समसामयिक प्रस्तुतियाँ भी शामिल हैं। इनके साथ-साथ रंगमण्डल ने विदेशी भाषाओं के नाटकों के अनुवाद और नाट्य रूपान्तरण भी प्रस्तुत किए हैं। रंगमण्डल के साथ राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त रंग-निर्देशकों ने काम किया है।

रंगमण्डल ने 1992-1993 में मोहन राकेश की 20वीं पुण्यतिथि पर उनके नाटकों का महत्वपूर्ण उत्सव आयोजित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। रंगमण्डल की रजत जयन्ती के अवसर पर वर्ष 1991 में रंगमण्डल की प्रस्तुतियों से सम्बन्धित छायाचित्र मंच-विन्यास, वेशभूषा, मंच सामग्री पोस्टर आदि को शामिल करते हुए 'रंगयात्रा' नामक एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

रंगमण्डल ने 97 नाटककारों के लगभग 187 से भी अधिक नाटक प्रस्तुत किए हैं और अब तक लगभग 95 रंग-निर्देशकों ने रंगमण्डल के साथ कार्य किया है। रंगमण्डल से सम्बद्ध अनेक अभिनेताओं ने थिएटर, सिनेमा और टेलीविजन के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम किया है। रंगमण्डल ने पूरे भारतवर्ष के व्यापक दौरे किए हैं तथा देश से बाहर जर्मनी, पोलैण्ड, ब्रिटेन, नेपाल, मॉरिशस, बांग्लादेश एवं चीन में सफल प्रस्तुतियाँ दी हैं।

दिनांक 22 अगस्त, 2013 को रंगमण्डल ने अपनी 50वीं वर्षगाँठ के अवसर पर स्वर्ण जयन्ती कार्यक्रम का शुभारम्भ किया तथा दिनांक 22, 23 एवं 24 मार्च, 2014 को बहुत ही धूमधाम से रंगमण्डल ने पूर्व में कार्य कर चुके अपने सभी कलाकारों को आमन्त्रित किया। इस अवसर पर उन कलाकारों ने यादगार नाट्य प्रस्तुतियों के कुछ दृश्यों को व पुराने नाटकों के गीतों को प्रस्तुत किया।

आज़ादी के अमृत महोत्सव के मौके पर रंगमण्डल ने 'पहला सत्याग्रही' व 'खूब लड़ी मर्दानी, सुभद्रा की ज़बानी' जैसे नाटकों का देश भर में प्रदर्शन किया वहीं 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' और 'अन्धा युग' जैसे क्लासिक नाटक भी तैयार किये हैं।

रंगमण्डल टीम

प्रशासनिक विभाग : जुबेर बेदी, आदित्य वर्मा

तकनीकी विभाग : मो. सुलेमान, मुकेश कुमार, बिक्रम कुमार, पार्वती बिष्ट

रंगमण्डल प्रमुख : jkt'k flg



राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

National School of Drama Repertory Company

National School of Drama Repertory was formed in 1964-65 on an experimental basis by Sh. E. Alkazi. In the beginning, it consisted of only four actors and later expanded into a larger group of actors, musicians and technicians, mainly drawn from graduates of the National School of Drama, Delhi. In 1964, Late Shri Om Shivpuri led the Company and in 1977, Late Shri Manohar Singh became the first regular Chief of the Repertory. When Manohar Singh left the Repertory Company in 1985 for a short period, its functioning was looked after by Ms. Uttara Baokar and Ms. Surekha Sikri.

Late Shri J.N. Kaushal officiated as the Chief till 1988. He was followed by Prof. Ram Gopal Bajaj from 1989 to 1994; Shri Kaushal took over the rein one more time from 1994 to 97; Shri Suresh Sharma was the regular Chief of the Repertory Company from 1999 to 2021. Presently, Shri Rajesh Singh is the Chief of the Repertory Company.

Over the years, Repertory has produced a variety of plays ranging from stylized musical to realistic and contemporary adaptation of foreign and Indian plays. In addition, several eminent directors of national and international repute from within the country and abroad have worked with the Company. The Repertory has performed over 187 plays by 97 playwrights and has worked with 95 directors. Quite a few of the actors of the company have emerged as celebrities in theatre, cinema and television in India. The Repertory tours extensively all over the Country and has made several successful trips to Germany, Poland, UK, Nepal, Mauritius, Bangladesh and China.

In 1993, the Company organized a major Festival of Mohan Rakesh's plays to mark his 20th death anniversary. In 1991 on the occasion of the Company's Silver Jubilee, Rang Yatra an exhibition consisting its Photographs, Set-Models, Costumes, Properties and Poster etc. was also put up.

August 22, 2013 was the Repertory Company's 50th foundation day and Golden Jubilee Celebrations were kick-started on this day. The second important event of Company's Golden Jubilee Celebrations was held from March 22 to 24, 2014, where all the ex-repertory company members were invited. On this occasion scenes and songs from memorable productions of the past were presented to the audience, in what turned out to be an extremely nostalgic evening for many people.

On the occasion of Azadi ka Amrit Mahotsav, Repertory performed plays like 'Pehla Satyagrahi' and 'Khoob Ladi Mardaani, Subhadra Ki Zabaani' across the country, while also producing classical plays like 'Abhijnan Shakuntalam' and 'Andha Yug'.

Repertory Team

Administration : Zubair Bedi, Aditya Verma

Technical Persons: Md. Suleman, Mukesh Kumar, Bikram Kumar, Parvati Bisht

Repertory Chief : **Rajesh Singh**



National School of Drama Repertory Company
Bahawalpur House, Bhagwandas Road
New Delhi-110001
Ph. 011-23031105, 23031106
nsdrepertory2022@gmail.com
Website : www.nsd.gov.in

Design : Himanshu B Joshi
#9810549956